अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : आठवीं– जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 08 जनवरी, 2023)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1=(15)

(i) वचनयोगी में तिर्यंचगति में कुल कितने भेद हैं-
(क) 10 (ख) 13
(ग) 26 (घ) 48 (ख)

(ii) एकान्त नपुंसक वेद कितनी गति में पाया जा सकता है-
(क) 1 (ख) 2
(ग) 3 (घ) 4 (क)

(iii) छह लेश्या में जीव के कुल कितने भेद हैं-
(क) 10 (ख) 30
(ग) 40 (घ) 198 (ग)

(iv) मेरु पर्वत में तिर्यंच के जीव के भेद नहीं पाये जाते हैं-
(क) बादर वायुकाय के अपर्याप्त-पर्याप्त
(ख) बेइन्द्रिय का पर्याप्त
(ग) बादर तेउकाय के अपर्याप्त-पर्याप्त
(घ)बादर वनस्पतिकाय का अपर्याप्त-पर्याप्त (ग)

(v) कार्मण काय योग में जीव के भेद पाये जाते हैं-
(क) 216 (ख) 347
(ग) 101 (घ) 48 (ख)

(vi) अपरीत में योग पाये जाते हैं-
(क) 12 (ख) 10
(ग) 13 (घ) 15 (ग)

(vii) अचरम में उपयोग पाये जाते हैं-
(क) 3 (ख) 6
(ग) 8 (घ) 10 (ग)

(viii) अनिन्द्रिय में योग पाये जाते हैं-
(क) 13 (ख) 15
(ग) 9 (घ) 7 (घ)

(ix) पद्म लेश्या में गुणस्थान पाये जाते हैं-
(क) 4 (ख) 5
(ग) 8 (घ) 7 (घ)

(x) क्षयोपशम समकित में जीव के 14 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं-
(क) 14 (ख) 10
(ग) 4 (घ) 2 (घ)

(xi) चन्द्र विमानवासी देव की आहारेच्छा का जघन्य काल कितना है-
(क) एक दिन (ख) पृथक्त्व वर्ष
(ग) पृथक्त्व दिवस (घ) तीन दिन (ग)

(xii) आत्मारम्भी-परारम्भी का थोकड़ा भगवती सूत्र के पहले शतक के कौनसे उद्देशक में चलता है-
(क) पहले (ख) दूसरे
(ग) ग्यारहवें (घ) चौथे (क)

(xiii) स्वयं पाप कार्यों में प्रवृत्त होना कहलाता है-
(क) आत्मारम्भी (ख) परारम्भी
(ग) तदुभयारम्भी (घ) अनारम्भी (क)

(xiv) मैं क्षायिक भाव का भेद नहीं हूँ-
(क) अनन्तदान (ख) क्षायिक सम्यक्त्व
(ग) केवल ज्ञान (घ) अचक्षु दर्शन (घ)

(xv) क्षायिक और पारिणामिक भाव रूप द्विसंयोगी भंग पाया जाता है-
(क) उपशम श्रेणी में (ख) केवलज्ञानी में
(ग) सिद्धों में (घ) अप्रमत्त साधु में (ग)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1 = (15)

(i) अभाषक में देवगति के भेद नहीं आते हैं (नहीं)

(ii) चक्षुदर्शन में तिर्यंच गति में 28 भेद होते हैं। (नहीं)

(iii) वेदक समकित में 35 वैमानिक देवों के पर्याप्त भेद पाये जाते हैं। (नहीं)

(iv) पुरुष वेद में देवगति के कुल 198 भेद पाये जाते हैं। (हाँ)

(v) नो संयती नो असंयती नो संयतासयंती में जीव के कुल 15 भेद पाये जाते हैं। (नहीं)

(vi) कृष्ण लेशी से सलेश्यी संख्यात गुणा है। (नहीं)

(vii) सास्वादन समकित में योग 13 पाये जाते हैं। (हाँ)

(viii) अपरीत में गुणस्थान पहला ही पाया जाता है। (हाँ)

(ix) केवल दर्शनी से अचक्षुदर्शनी अनन्त गुण हैं। (हाँ)

(x) आहारक से अनाहारक विशेषाधिक हैं। (नहीं)

(xi) नैरयिक भी मनोभक्षी आहारी होते हैं। (नहीं)

(xii) अशुभ योगी भी अनारम्भी हो सकता है। (नहीं)

(xiii) कापोत लेशी तेइन्द्रिय जीव आत्मारंभी आदि होता है, अनारंभी नहीं। (हाँ)

(xiv) भव्यत्व भाव का सिद्धावस्था में अभाव हो जाता है। (हाँ)

(xv) केवल ज्ञानियों में भाव के 2 भंग ही पाये जाते हैं। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए:- 15x1 = (15)

(i)	मिथ्यादृष्टि	(क) 332	553
(ii)	अढ़ाई द्वीप में	(ख) उपयोग 6	351
(iii)	अपर्याप्त में	(ग) 351	332
(iv)	अभाषक में	(घ) जीव के 3 भेद	358
(v)	सन्नी में	(च) 14 हजार वर्ष	424
(vi)	चौरेन्द्रिय में	(छ) 19 हजार वर्ष	उपयोग 6
(vii)	देवी में	(ज) 553	लेश्या 4
(viii)	मिश्रदृष्टि	(झ) शुक्ल लेश्या	योग 10
(ix)	क्षायिक सम्यक्त्व में	(य) लेश्या 4	गुणस्थान 11
(x)	तेजो लेश्या में	(र) अनन्त वीर्य	जीव के 3 भेद
(xi)	छठा देवलोक	(ल) 424	14 हजार वर्ष
(xii)	नवाँ देवलोक	(व) विभंग ज्ञान	19 हजार वर्ष
(xiii)	औदयिक भाव	(क्ष) गुणस्थान 11	शुक्ल लेश्या
(xiv)	क्षायोपशमिक भाव	(त्र) योग 10	विभंग ज्ञान
(xv)	क्षायिक भाव	(ज्ञ) 358	अनन्त वीर्य

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1 = (15)

(i)	मैं योग का ऐसा भेद हूँ, जिसमें जीव के 233 भेद पाये जाते हैं।	वैक्रिय काय योग
(ii)	मैं वेद द्वार का ऐसा भेद हूँ, जो किसी भी जीव के भेद में नहीं पाया जाता हूँ।	एकान्त स्त्रीवेद
(iii)	मुझमें जीव के कुल 106 भेद पाये जाते हैं।	एक लेश्या में
(iv)	कर्मभूमि क्षेत्र होते हुए भी मुझमें परिहार विशुद्धि चारित्र नहीं पाया जाता है।	महाविदेह क्षेत्र
(v)	मुझमें जीव के कुल 170 भेद पाये जाते हैं।	दो दृष्टि
(vi)	मेरा तात्पर्य क्षायिक की वेदक से हैं।	वेदक समकित
(vii)	मुझको छोड़कर शेष सभी गुणस्थान वाले जीव आहारक हो सकते हैं।	चौदहवाँ गुणस्थान
(viii)	मुझमें अभव्य और सिद्ध जीवों का समावेश किया जाता है।	अचरम
(ix)	मुझमें 4 से 7 गुणस्थान एवं सभी 15 योग मिल सकते हैं।	क्षयोपशम समकित
(x)	मुझमें अनाकार उपयोग नहीं माना जाता है।	दसवाँ गुणस्थान
(xi)	मैं बिना इच्छा के किया गया आहार हूँ।	अनाभोग निर्वर्तित
(xii)	मुझे असंसार समापन्नक भी कहते हैं।	सिद्ध
(xiii)	मैं सादि अनन्त भाव हूँ।	क्षायिक भाव
(xiv)	मुझमें मिथ्यात्व के सिवाय औदयिक भाव के सभी भेद पाये जाते हैं।	सास्वादन गुणस्थान
(xv)	मैं सान्निपातिक भाव का ऐसा त्रिक संयोगी भेद हूँ, जो तेरहवें और चौदहवें गुणस्थान में पाया जाता हूँ।	पारिणामिक-औदायिक-क्षायिक

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- 8x2 = (16)

(i) एक वेद में पाये जाने वाले 233 भेद लिखिए।

उ. नोटः बोनस अंक दिया जाय।
(14 नारकी, 10 सन्नी तिर्यंच के छोड़कर 38 तिर्यंच, 101 सम्मूर्च्छिम मनुष्य और तीसरे देवलोक से सर्वार्थसिद्ध विमान तक 35 जाति के देवता के अपर्याप्त-पर्याप्त- 70 देवता के, इस प्रकार कुल 223 भेद होते हैं।)

(ii) कार्मण काय योग में पाये जाने वाले अपर्याप्त के भेद लिखिए।

उ. 7 नारकी के अपर्याप्त तथा 24 तिर्यंच के अपर्याप्त, 101 सम्मूर्च्छिम मनुष्य के, 101 सन्नी मनुष्य के अपर्याप्त और 99 देवता के अपर्याप्त।

(iii) अपर्याप्त जीव में बासठिया लिखिए।

उ.

	जीव	गुणस्थान	योग	उपयोग	लेश्या
अपर्याप्त	7	3	5	9	6

(iv) वेदक समकित में बासठिया लिखिए।

उ.

	जीव	गुणस्थान	योग	उपयोग	लेश्या
वेदक समकित	2	4	11	7	6

(v) तिर्यंच पंचेन्द्रिय में आहारेच्छा का काल कितना व किस अपेक्षा से लिया है ?

उ. तिर्यंच पंचेन्द्रिय में आहारेच्छा का जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त्त तथा उत्कृष्ट काल दो दिन बतलाया, उत्कृष्ट काल देवकुरु-उत्तरकुरु क्षेत्र में उत्पन्न तिर्यंच युगलिकों की अपेक्षा से समझना चाहिए।

(vi) शुभयोगी की परिभाषा लिखिए।

उ. जो उपयोगपूर्वक, सावधानीपूर्वक समत्व भावों के साथ योगों की प्रवृत्ति करता है, उसे शुभयोगी कहते हैं।

(vii) दसवें गुणस्थान में क्षायोपशमिक भाव के पाये जाने वाले भेद लिखिए।

उ. चार ज्ञान, तीन दर्शन, दानादि पाँच लब्धियाँ, क्षायोपशमिक चारित्र = 13

(viii) आठवें गुणस्थान में औदयिक भाव के पाये जाने वाले भेद लिखिए।

उ. असिद्धत्व, शुक्ल लेश्या, क्रोध, मान, माया, लोभ, मनुष्यगति, तीनवेद = 10

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3 = (24)

(i) असन्नी में पाये जाने वाले जीव के भेदों को लिखिए।

उ. असन्नी में 191 भेद- (पहली नारकी, 25 भवनपति, 26 वाणव्यन्तर के अपर्याप्त, 38 तिर्यंच के, 101 सम्मूर्च्छिम मनुष्य के)

(ii) लवण समुद्र में बादर तेउकाय मानने का क्या कारण है ?

उ. लवण समुद्र का जल उछलने वाला तथा क्षुभित होने वाला है, वहाँ बड़वानल, पानी के टकराहट आदि से उत्पन्न होने वाली बादर तेउकाउ मानी जाती है।

(iii) 102 बोल के बासठिये से गति द्वार के 8 बोलों की अल्पबहुत्व लिखिए।

उ. सबसे थोड़ी मनुष्यिनी, उनसे मनुष्य असंख्यात गुण, उनसे नारकी असंख्यात गुण, उनसे तिर्यंचिनी असंख्यात गुण, उनसे देव असंख्यात गुण, उनसे देवी संख्यात गुण, उनसे सिद्ध अनन्त गुण और उनसे तिर्यंच अनन्त गुण हैं।

(iv) दर्शन द्वार के सभी चार बोलों का बासठिया लिखिए।

उ.

	जीव	गुणस्थान	योग	उपयोग	लेश्या
चक्षुदर्शनी	6	12	14	10	6
अचक्षुदर्शनी	14	12	15	10	6
अवधिदर्शनी	2	12	15	10	6
केवलदर्शनी	1	2	7	2	1

(v) लोम एवं प्रक्षेप आहार को परिभाषित कीजिए।

उ. लोम आहार- शरीर पर्याप्ति होने के बाद रोमों (त्वचा) के द्वारा होने वाला आहार लोमाहार कहलाता है।

प्रक्षेपाहार (कवलाहार)- मुख से या नली आदि से इंजेक्शन आदि से शरीर में आहार डालना, ग्लूकोज आदि चढ़ाना प्रक्षेपाहार कहलाता है।

(vi) 6 लेश्याओं में आत्मारम्भी आदि के होने की विवेचना कीजिए।

उ. कृष्ण, नील, कापोत लेश्या वाले 22 दण्डक (ज्योतिषी एवं वैमानिक को छोड़कर) आत्मारंभी हैं, परारंभी हैं, तदुभयारंभी हैं, किन्तु अनारंभी नहीं हैं, यानि समुच्चय जीव की तरह कह देना, परन्तु प्रमादी-अप्रमादी (साधु) और सिद्ध नहीं कहना चाहिए। समुच्चय जीव तेजोलेशी 18 दण्डक, पद्मलेशी, शुक्ललेशी तीन-तीन दण्डक मनुष्य की तरह कह देना चाहिए।

(vii) पारिणामिक भाव की परिभाषा लिखिए।

उ. जिसके कारण मूल वस्तु में किसी प्रकार का परिवर्तन न हो, किन्तु स्वभाव में ही परिणत होते रहना पारिणामिक भाव है। अथवा कर्म के उदय, उपशम, क्षय और क्षयोपशम की अपेक्षा न रखने वाले द्रव्य की स्वभावभूत अनादि पारिणामिक शक्ति से ही आविर्भूत भाव को पारिणामिक भाव कहते हैं।

(viii) जीवों में पाये जाने वाले सान्निपातिक भाव का छठा भेद लिखिए।

उ. क्षायोपशमिक, पारिणामिक, औदयिक, औपशमिक तथा क्षायिक, ये पाँचों रूप पंचसंयोगी भाव चौथे से ग्यारहवें गुणस्थान तक के ऐसे जीवों में पाये जाते हैं जो क्षायिक समकित प्राप्त करने के बाद उसी भव में उपशम श्रेणि को प्राप्त करते हैं।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : आठवीं – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 11 जनवरी, 2022)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(a) एकान्त मिथ्यादृष्टि में जीव के कुल कितने भेद हैं-
(क) 280 (ख) 290
(ग) 275 (घ) 283 (क)

(b) त्रसकाय में जीव के कुल भेद कितने हैं-
(क) 198 (ख) 303
(ग) 541 (घ) 26 (ग)

(c) कार्मण काय योग में मनुष्य के कितने भेद हैं-
(क) 347 (ख) 99
(ग) 24 (घ) 217 (घ)

(d) अवधि दर्शन में जीव के कुल कितने भेद हैं-
(क) 198 (ख) 247
(ग) 30 (घ) 14 (ख)

(e) अढाई द्वीप के बाहर देव के कितने भेद हैं-
(क) 118 (ख) 72
(ग) 46 (घ) 76 (ख)

(f) किस सूत्र के तीसरे पद में 102 बोल के बासठिए का वर्णन है-
(क) पन्नवणा (ख) भगवती
(ग) उत्तराध्ययन (घ) जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति (क)

(g) अकषायी में गुणस्थान पाये जाते हैं-
(क) 10 (ख) 9
(ग) 4 (घ) 6 (ग)

(h) जीव-6, गुणस्थान-1, योग-13, उपयोग-6, लेश्या-6 पाये जाते हैं-
(क) सास्वादन समकिती में (ख) क्षयोपशम समकिती में
(ग) वेदक समकिती में (घ) क्षायिक समकिती में (क)

(i) निम्न में से सबसे कम होते हैं-
(क) अचक्षुदर्शनी (ख) अवधिदर्शनी
(ग) चक्षुदर्शनी (घ) केवलदर्शनी (ख)

(j) पन्नवणा सूत्र के किस पद के प्रथम उद्देशक में आहार के थोकड़े का वर्णन है-
(क) तीसरे पद में (ख) अट्ठाईसवें पद में
(ग) पाँचवें पद में (घ) सातवें पद में (ख)

(k) कुछ अधिक 26 हजार वर्ष आहारेच्छा का उत्कृष्ट काल किसका है-
(क) पहला ग्रैवेयक (ख) दूसरा ग्रैवेयक
(ग) तीसरा ग्रैवेयक (घ) चौथा ग्रैवेयक (घ)

(l) कृष्ण, नील और कापोत लेश्या वाले 22 दण्डक नहीं है-
(क) आत्मारम्भी (ख) अनारम्भी
(ग) परारम्भी (घ) तदुभयारम्भी (ख)

(m) क्षायिक, औदयिक और पारिणामिक, ये तीनों भाव होते हैं-
(क) पहले तीन गुणस्थानों में (ख) चौथे से ग्यारहवें गुणस्थानों में
(ग) बारहवें गुणस्थान में (घ) तेरहवें और चौदहवें गुणस्थानों में (घ)

(n) सूक्ष्म संपराय गुणस्थान में औदयिक भाव के भेद हैं-
(क) 21 (ख)13
(ग) 4 (घ) 2 (ग)

(o) किस ग्रन्थ के अनुसार उपशम चारित्र मात्र ग्यारहवें गुणस्थान में ही माना जाता है-
(क) कर्मग्रन्थ भाग-5 (ख)प्रवचन सारोद्धार
(ग) आवश्यक सूत्र (घ) पन्नवणा सूत्र (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1 = (15)

(a) चक्षुरिन्द्रिय में तिर्यंच के 20 भेद होते हैं। (नहीं)
(b) सन्नी तिर्यंच एकान्त मिथ्यादृष्टि नहीं होते हैं। (हाँ)
(c) सेवार्त्तक संहनन में जीव के समुच्चय 179 भेद होते हैं। (हाँ)
(d) सन्नी मनुष्य नियमा अभाषक होते हैं। (नहीं)
(e) अढाई द्वीप में जीव के समुच्चय भेद 303 होते हैं। (नहीं)
(f) वेद द्वार में सबसे थोड़े पुरुषवेदी होते हैं। (हाँ)
(g) भाषक से अभाषक जीव अधिक होते हैं। (हाँ)
(h) केवलदर्शनी में अधिकतम 2 उपयोग नहीं होते हैं। (नहीं)
(i) वैक्रिय-वैक्रिय मिश्र काय योग पर्याप्त सूक्ष्मकायिक जीवों में होता है। (नहीं)
(j) इच्छापूर्वक किया गया आहार आभोग निवर्तित है। (हाँ)
(k) औदारिक के 10 दण्डक ओज आहारी नहीं है। (नहीं)
(l) अप्रमादी संयति अनारम्भी है। (हाँ)
(m) क्षायिक भाव अनादि-अनन्त है। (नहीं)
(n) तेरहवें और चौदहवें गुणस्थान में घातिकर्मों का क्षय हो जाने से क्षायोपशमिक भाव नहीं होते हैं। (हाँ)
(o) क्षपक श्रेणि करने वाले जीवों में चतु:संयोगी सान्निपातिक भाव पाया जाता है। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 15x1 = (15)

(a)	नपुंसक वेद	(क) 351	193
(b)	उपशम समकिती	(ख) 179	198 (138) बोनस अंक देवें।
(c)	सेवार्त्तक संहनन	(ग) 198	179
(d)	नो गर्भज	(घ) 20	351
(e)	संयतासंयत	(च) 193	20
(f)	अनिन्द्रिय	(छ) 4 गुणस्थान	योग-7
(g)	अयोगी	(ज) 10 गुणस्थान	उपयोग-2
(h)	छेदोपस्थापनीय संयत	(झ) योग 7	4 गुणस्थान
(i)	लोभकषायी	(य) उपयोग 2	10 गुणस्थान
(j)	दूसरा देवलोक	(र) 29 हजार वर्ष	2 हजार वर्ष से कुछ अधिक
(k)	सातवाँ ग्रैवेयक	(ल) 2 हजार वर्ष से कुछ अधिक	29 हजार वर्ष
(l)	शुभयोगी	(व) उपभोग	अनारम्भी
(m)	औदयिक भाव	(क्ष) अनन्त दान	असिद्धत्व
(n)	क्षायिक भाव	(त्र) असिद्धत्व	अनन्त दान
(o)	क्षायोपशमिक भाव	(ज्ञ) अनारम्भी	उपभोग

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1 = (15)

(a) मैं लेश्या द्वार का ऐसा भेद हूँ, जो किसी भी जीव के भेद में नहीं पाया जाता हूँ। पाँच लेश्यी में

(b) मैं योग द्वार का ऐसा भेद हूँ, जिसमें जीव के 247 भेद पाये जाते हैं। औदारिक मिश्र काय

(c) मुझमें देव के 72 भेद होते हैं। अढ़ाई द्वीप के बाहर/तिरछा लोक में

(d) मुझमें जीव के 347 भेद होते हैं। कार्मण काय/ अनाहारक

(e) मैं तीसरे और चौथे देवलोक के नीचे प्रतर में रहता हूँ। त्रैसागरिक किल्विषिक

(f) मैं दर्शन द्वार में सबसे अधिक संख्या में हूँ। अचक्षुदर्शनी

(g) मैं इन्द्रिय द्वार का बोल होते हुए भी मुझ में गुणस्थान की अपेक्षा एक शुक्ल लेश्या ही पायी जाती है। अनिन्द्रिय

(h) मैं ऐसी समकित वाला हूँ, जिसमें गुणस्थान 8 तथा योग 13 मिलते हैं। उपशम समकिती

(i) मैं क्षायिक समकित पाने के एक समय के पूर्व की अवस्था हूँ। वेदक समकित

(j) मैं उत्पत्ति के प्रथम समय से लेकर शरीर पर्याप्ति के अपर्याप्त अवस्था तक होने वाला आहार हूँ। ओज आहार

(k) मैं अधोलोकवासी होते हुए भी मात्र अचित्त पुद्‌गलों का ही आहार करता हूँ। नैरयिक

(l) हम प्रमादी साधु होते हुए भी अनारम्भी नहीं माने जाते हैं। अशुभ योगी

(m) मैं कर्मों की शुभाशुभ प्रकृतियों के विपाक का अनुभव कराने वाला भाव हूँ। औदयिक

(n) घाति कर्मों का क्षय हो जाने के बाद सिद्ध बनने में बहुत विलम्ब नहीं लगता, इसलिए मुझे तेरहवें, चौदहवें गुणस्थान में नहीं माना जाता है। भव्यत्व

(o) मैं एक ऐसा भाव हूँ, जिसके कारण मूल वस्तु में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता है। पारिणामिक

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- 8x2=(16)

(a) मिश्रदृष्टि में मिलने वाले जीव के 103 भेद लिखिए।

नारकी-7, तिर्यंच-5, मनुष्य-15, देवता-76 = 103

(b) अवधिज्ञानी में मिलने वाले जीव के 210 भेद लिखिए।

नारकी-13, तिर्यंच-5, मनुष्य-30, देवता-162 = 210

(c) परीत किसे कहते हैं ?

जिन जीवों ने अनन्तकाय को छोड़कर प्रत्येक काय को प्राप्त कर लिया है और जब तक वे प्रत्येक काय में हैं, तब तक वे काय परीत कहलाते हैं। अथवा

ऐसे शुक्लपक्षी जीव जिन्होंने एक बार भी सम्यग्दर्शन प्राप्त कर लिया है, वे संसार परीत्त कहलाते हैं।

(d) चौथे देवलोक में देवों का जघन्य और उत्कृष्ट आहारेच्छा का काल लिखिए।

जघन्य- 2000 वर्ष से कुछ अधिक

उत्कृष्ट- 7000 वर्ष से कुछ अधिक

(e) आरम्भ किसे कहते हैं ?

ऐसा सावद्य कार्य करना या किसी पाप कार्य में प्रवृत्ति करना, जिससे किसी जीव को कष्ट पहुँचे या उसके प्राणों का घात हो, उसे आरंभ कहते हैं।

(f) शुभयोगी किसे कहते हैं ?

जो उपयोगपूर्वक, सावधानीपूर्वक समत्त्व भावों के साथ योगों की प्रवृत्ति करता है, उसे शुभयोगी कहते हैं।

(g) तेजो, पद्‌म, शुक्ल लेश्या वालों में समुच्चय जीव की अपेक्षा क्या विशेषता है ?

तेजो, पद्‌म और शुक्ल लेश्या वाले प्रमादी साधु शुभयोगी तथा अशुभ योगी दोनों प्रकार के हो सकते हैं। जो शुभयोगी है, वे अनारंभी तथा जो अशुभयोगी है, वे आत्मारंभी, परारंभी, तदुभयारंभी होते हैं।

(h) पारिणामिक भाव से क्या तात्पर्य है ?
जिसके कारण मूल वस्तु में किसी प्रकार का परिवर्तन न हो, किन्तु स्वभाव में ही परिणत होते रहना, पारिणामिक भाव है अथवा कर्म के उदय, उपशम, क्षय और क्षयोपशम की अपेक्षा न रखने वाले द्रव्य की स्वभावभूत अनादि पारिणामिक शक्ति से ही आविर्भूत भाव को पारिणामिक भाव कहते हैं।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3 = (24)

(a) नीचालोक में मिलने वाले मनुष्य और देवों के भेद लिखिए।
भवनपति, वाणव्यन्तर में जाने पर अपर्याप्त अवस्था में असन्नी किस कारण से माना जाता है ?
मनुष्य (जम्बूद्वीप के महाविदेह क्षेत्र की सलिलावती व व्रपा विजय नीचे लोक में 100 योजन तक गई हुई हैं, वहाँ रहने वाले मनुष्यों की अपेक्षा से गर्भज मनुष्य) के अपर्याप्त, पर्याप्त एवं सम्मूर्च्छिम, 10 भवनपति, 15 परमाधामी, इन 25 के अपर्याप्त-पर्याप्त = 50 देवता के।

(b) परीत के भेदों की परिभाषा लिखिए।
संसार परीत- ऐसे शुक्लपक्षी जीव जिन्होंने एक बार भी सम्यग्दर्शन का प्राप्त कर लिया है, वे संसार परीत कहलाते हैं।
काय परीत-जिन जीवों ने अनन्तकाय को छोड़कर प्रत्येक काय को प्राप्त कर लिया है और जब तक वे प्रत्येक काय में हैं, तब तक वे काय परीत कहलाते हैं।

(c) 102 बोल के बासठिए से कायद्वार का अल्पबहुत्व लिखिए।
सबसे थोड़े त्रसकाय, उनसे तेउकाय असंख्यात गुण, उनसे पृथ्वीकाय विशेषाधिक, उनसे अप्काय विशेषाधिक, उनसे वायुकाय विशेषाधिक, उनसे अकाय अनन्त गुण, उनसे वनस्पतिकाय अनन्त गुण और उनसे सकाय विशेषाधिक हैं।

(d) 102 बोल के बासठिए के आधार से स्पष्ट कीजिए कि असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय को पहली नारकी, भवनपति, वाणव्यन्तर में जाने पर अपर्याप्त अवस्था में असन्नी किस कारण माना जाता है ?
असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय को पहली नारकी, असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय काल करके जब इन स्थानों में आकर उत्पन्न होते हैं, तब वे अपर्याप्त अवस्था में कुछ देर तक असन्नी रहते हैं, बाद में सन्नी बनते हैं। बाटा बहती अवस्था में रहते हुए वे असन्नी पंचेन्द्रिय के प्रायोग्य ही 7 कर्मों का बंध करते हैं।

(e) परिहारविशुद्धि संयत और यथाख्यात संयत में गुणस्थान, योग, उपयोग और लेश्या 102 बोल के बासठिए के आधार पर लिखिए।

	जीव	गुणस्थान	योग	उपयोग	लेश्या
परिहारविशुद्धि संयत	1	2	9	7	3
यथाख्यात संयत	1	4	11	9	1

(f) चक्षुदर्शनी और अवधिदर्शनी में जीव के भेद, गुणस्थान, योग, उपयोग और लेश्या 102 बोल के बासठिए के आधार पर लिखिए।

	जीव के भेद	गुणस्थान	योग	उपयोग	लेश्या
चक्षुदर्शनी	6	12	14	10	6
अवधिदर्शनी	2	12	15	10	6

(g) क्षायोपशमिक भाव के भेद लिखिए।
1. मतिज्ञान, 2. श्रुतज्ञान, 3. अवधिज्ञान, 4. मनपर्यायज्ञान, 5. मति-अज्ञान, 6. श्रुत-अज्ञान, 7. विभंगज्ञान (अवधि-अज्ञान), 8. चक्षुदर्शन, 9. अचक्षुदर्शन, 10. अवधिदर्शन, 11. दान, 12. लाभ, 13. भोग, 14. उपभोग, 15. वीर्य,16. क्षायोपशमिक सम्यक्त्व,17. क्षायोपशमिक चारित्र-सर्वविरति, 18. संयमासंयम-देशविरति।

(h) किस-किस गुणस्थान में 5 भावों में से कितने व कौन-कौनसे भाव होते हैं ?

पहले तीन गुणस्थानों में औदयिक, क्षायोपशमिक और पारिणामिक ये तीन भाव होते हैं। चौथे से ग्यारहवें गुास्थान तक आठ गुणस्थानों में पाँचों भाव, बारहवें गुणस्थान में औपशमिक के सिवाय शेष चार भाव होते हैं, तेरहवें और चौदहवें गुणस्थान में क्षायिक, औदयिक, पारिणामिक ये तीन भाव होते हैं।

कक्षा : आठवीं – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 05 जनवरी, 2020)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(a) रसनेन्द्रिय में तिर्यञ्च के भेद हैं-
(क) 20 (ख) 22
(ग) 24 (घ) 26 (घ)

(b) वैक्रिय काय योग में तिर्यञ्च के भेद हैं-
(क) 5 (ख) 13
(ग) 6 (घ) 18 (ग)

(c) नपुंसक वेद में जीव के कुल भेद हैं-
(क) 223 (ख) 410
(ग) 193 (घ) इनमें से कोई नहीं (ग)

(d) चार लेश्या में मनुष्य के भेद हैं-
(क) 172 (ख) 112
(ग) 60 (घ) 303 (क)

(e) अचरम में जीव के कुल भेद हैं -
(क) 563 (ख) 553
(ग) 04 (घ) इनमें से कोई नहीं (ख)

(f) नन्दीश्वर द्वीप में तिर्यञ्च के भेद हैं -
(क) 48 (ख) 6
(ग) 46 (घ) शून्य (ग)

(g) पर्याप्त में जीव के कुल कितने भेद हैं-
(क) 332 (ख) 192
(ग) 231 (घ) इनमेंसे कोई नहीं (ग)

(h) निम्न में से सबसे कम होते हैं-
(क) मनोयोगी (ख) वचन योगी
(ग) काय योगी (घ) अयोगी (क)

(i) निम्न में से सबसे अधिक होते हैं-
(क) क्रोध कषायी (ख) मान कषायी
(ग) माया कषायी (घ) लोभ कषायी (घ)

(j) पन्नवणा सूत्र के कौनसे पद में 102 बोल के बासठिये का वर्णन है-
(क) पाँचवें (ख) सातवें
(ग) तीसरे (घ) आठवें (ग)

(k) अनिन्द्रिय में कौनसा गुणस्थान है
(क) 13वाँ (ख) 14वाँ
(ग) दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं (ग)

(l) अपरीत जीव हैं-
(क) अभवी (ख) कृष्ण पाक्षिक
(ग) दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं (ग)

(m) अचरम में गुणस्थान हैं-
(क) पहला (ख) 1 से 14
(ग) 1 से 3 (घ) 4 से 14 (क)

(n) पृथ्वीकाय में आहारेच्छा का जघन्य काल है-
(क) अन्तर्मुहूर्त्त (ख) 1 दिन
(ग) 1 मुहूर्त्त (घ) इनमें से कोई नहीं (घ)

(o) आहार के थोकड़े में आहारेच्छा का अधिकतम काल है-
(क) 33 सागर (ख) 33 वर्ष
(ग) 33 हजार वर्ष (घ) 3300 वर्ष (ग)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1 = (15)

(a)	सभी तिर्यञ्च शाश्वत हैं।	(नहीं)
(b)	सर्व मनुष्य नियमा भाषक होते हैं।	(नहीं)
(c)	क्षायिक समकित तिर्यञ्च में युगलिक में ही मिलती है।	(हाँ)
(d)	त्रसकाय में जीव के 10 भेद होते हैं।	(हाँ)
(e)	अनाहारक से अधिक आहारक जीव होते हैं।	(हाँ)
(f)	अपर्याप्त अवस्था में अधिकतम तीन योग होते हैं।	(नहीं)
(g)	सूक्ष्म-सम्पराय संयत में तीन में से एक लेश्या होती है।	(नहीं)
(h)	नैरयिक अचित्त पुद्‌गलों का आहार करते हैं।	(हाँ)
(i)	मनुष्य की आहारेच्छा का काल अधिकतम तीन दिन का है।	(हाँ)
(j)	संसार समापन्नक का तात्पर्य सिद्धों से हैं।	(नहीं)
(k)	संसारी जीव सिर्फ अप्रमादी होते हैं।	(नहीं)
(l)	सिद्ध भगवान अनारम्भी होते हैं।	(हाँ)
(m)	मति अज्ञान क्षायोपशमिक भाव है।	(हाँ)
(n)	12वें गुणस्थान में अधिकतम तीन भाव हो सकते हैं।	(नहीं)
(o)	पंच संयोगी सान्निपातिक भाव के 5 भेद हैं।	(नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 15x1 = (15)

(a)	कार्मण काय योग	(क) 10 उपयोग	347
(b)	अवधि दर्शन	(ख) 290	247
(c)	अपर्याप्त	(ग) 11 योग	332
(d)	समचतुरस्र संस्थान	(घ) 8 उपयोग	410
(e)	एक दृष्टि	(च) 410	290
(f)	मनुष्यिनी	(छ) 247	13 योग
(g)	वेदक समकित	(ज) लोम आहार	11 योग
(h)	सूक्ष्म सम्पराय संयत	(झ) 18	9 योग
(i)	अचरम	(य) भव्यत्व	8 उपयोग
(j)	अनाहारक	(र) 347	10 उपयोग
(k)	उत्पत्ति के प्रथम समय का आहार	(ल) 21	ओज आहार
(l)	त्वचा द्वारा लिया जाने वाला आहार	(व) 9 योग	लोम आहार
(m)	क्षायोपशमिक भाव	(क्ष) 332	18
(n)	औदयिक भाव	(त्र) ओज आहार	21
(o)	पारिणामिक भाव	(ज्ञ) 13 योग	भव्यत्व

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1 = (15)

(a)	मुझमें जीव के 84 भेद हैं।	शुक्ल लेश्या
(b)	मुझमें जीव के 94 भेद हैं।	वेदक समकित
(c)	मैं ऐसी समकित हूँ, जिसमें नरकानुपूर्वी का उदय नहीं रहता है।	सास्वादन समकित
(d)	मुझमें और वचनयोगी में जीव के भेदों की संख्या समान है।	भाषक
(e)	मुझमें और अर्धपुष्कर द्वीप में मनुष्यों की संख्या समान है।	धातकी खण्ड
(f)	दृष्टि द्वार में मैं सबसे अधिक हूँ।	मिथ्यादृष्टि
(g)	मैं 102 बोल के बासठिये का अंतिम द्वार हूँ।	चरम द्वार
(h)	मैं नो पर्याप्त नो अपर्याप्त से अनन्त गुणा हूँ।	अपर्याप्त
(i)	मुझमें अभवी तथा सिद्ध दोनों का समावेश है।	अचरम जीव
(j)	मैं दूसरे जीवों को पापकार्य में प्रवृत्त करने वाला हूँ।	परारम्भी
(k)	मेरे प्रमादी-अप्रमादी दो भेद हैं।	संयती/ साधु
(l)	मैं ऐसा सूत्र हूँ, जिसमें आत्मारम्भी-परारम्भी का अधिकार है।	भगवती सूत्र
(m)	मैं दो या दो से अधिक भावों से मिला हुआ भाव हूँ।	सान्निपातिक भाव
(n)	मैं एक ऐसा भाव हूँ जो सिद्धों में क्षायिक भाव के साथ में मिलता हूँ।	पारिणामिक भाव
(o)	मैं 11वें गुणस्थान में ही मिलने वाला औपशमिक भाव का भेद हूँ।	उपशम चारित्र

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- 8x2 = (16)

(a) क्षायिक समकित में जीव के कुल पर्याप्त भेद लिखिए।

उ. नरक-3, तिर्यञ्च-1, मनुष्य-45, देव-35 कुल 84।

(b) संसार परीत किसे कहते हैं ?

उ. ऐसे शुक्लपक्षी जीव जिन्होंने एक बार सम्यग्दर्शन को प्राप्त कर लिया है।

(c) कृष्ण, नील, कापोत लेशी जीवों की अल्प-बहुत्व लिखिए।

उ. कापोतलेशी अनन्त गुण, उनसे नील लेश्यी विशेषाधिक, उनसे कृष्णलेश्यी विशेषाधिक।

(d) आभोग निर्वर्तित आहार किसे कहते हैं ?

उ. इच्छा पूर्वक किया गया आहार आभोग निर्वर्तित आहार है।

(e) पहले देवलोक के देवों का जघन्य तथा उत्कृष्ट आहारेच्छा का काल लिखिए।

उ. जघन्य काल- पृथक्त्व दिवस और उत्कृष्ट काल दो हजार वर्ष।

(f) शुभयोगी किसे कहते हैं ?

उ. जो उपयोगपूर्वक, सावधानीपूर्वक समत्त्व भावों के साथ योगों की प्रवृत्ति करता है, उसे शुभयोगी कहते हैं।

(g) कापोत लेश्या वाला पृथ्वीकाय आत्मारंभी, परारंभी, तदुभयारंभी और अनारंभी में से क्या है ?

उ. कापोत लेश्या वाला पृथ्वीकाय आत्मारंभी, परारंभी, तदुभयारंभी है। अनारंभी नहीं है।

(h) क्षायिक भाव से क्या तात्त्पर्य है ?

उ. कर्म के आत्यन्तिक क्षय से प्रकट होने वाला भाव क्षायिक भाव है।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3=(24)

(a) **जम्बूद्वीप में मिलने वाले मनुष्य के सभी भेदों के नाम लिखिए।**

उ. जसम्बूद्वीप में 75 भेद (48 तिर्यंच के, 1 भरत, 1 ऐरवत, 1 महाविदेह, 1 देवकुरू, 1 उत्तरकुरू, 1 हरिवास, 1 रम्यक्वास, 1 हैमवत, 1 ऐरण्यवत, इन 9 के अपर्याप्त, पर्याप्त और सम्मूर्च्छिम = 27 मनुष्य के)

(b) **लवण समुद्र में बादर अग्नि है, कालोदधि समुद्र में क्यों नही ?**

उ. लवणसमुद्र का जल उछलने वाला तथा क्षुभित होने वाला है, वहाँ बड़वानल, पानी के टकराहट आदि से उत्पन्न होने वाली बादर तेउकाय मानी जाती है जबकि कालोदधि समुद्र का जल शान्त है, वहाँ बड़वानल आदि नहीं होने से बादर तेउकाय की सम्भावना नहीं है।

(c) **मरने वाले जीवों के सभी भेद लिखिए।**

उ.

	नरक	तिर्यंच	मनुष्य	देव	समुच्चय
मरने वालों में	7	48	217	99	371

(d) **मतिज्ञानी तथा विभंगज्ञानी में जीव के भेद, गुणस्थान तथा उपयोग 102 बोल के बासठिये के आधार पर लिखिए।**

उ.

	जीव	गुणस्थान	उपयोग
मतिज्ञानी	6	10	7
विभंगज्ञानी	2	2	6

(e) **102 बोल के बासठिये से जीव द्वार की अल्प-बहुत्व लिखिए।**

उ. सबसे थोड़े मनुष्य, उनसे नारकी असंख्यात गुण, उनसे देव असंख्यात गुण, उनसे सिद्ध अनन्त गुण, उनसे तिर्यंच अनन्त गुण और उनसे समुच्चय जीव विशेषाधिक है।

(f) **क्षायिक भाव के नौ भेद लिखिए।**

उ. क्षायिक भाव के 9 भेद- 1. केवलज्ञान, 2. केवलदर्शन, 3. क्षायिक सम्यक्त्व, 4. क्षायिक चारित्र, 5. अनन्त दान, 6. अनन्त लाभ, 7. अनन्त भोग, 8. अनन्त उपभोग, 9. अनन्त वीर्य।

अथवा

क्षायिक- भाव के उत्तर भेद इस प्रकार हैं- पहले तीन गुणस्थानों में क्षायिक भाव नहीं है। चौथे से ग्यारहवें गुणस्थान तक आठ गुणस्थानों में सम्यक्त्व, बारहवें गुणस्थान में सम्यक्त्व और चारित्र तथा तेरहवें, चौदहवें गुणस्थान में सम्यक्त्व, चारित्र, ज्ञान, दर्शन, दानादि पाँच लब्धियाँ इस प्रकार कुल नौ भाव होते हैं।

(g) **जीवों में पाये जाने वाले त्रिक संयोगी भावों के भेद लिखिए।**

उ. क्षायोपशमिक, पारिणामिक और औदयिक रूप त्रिक संयोगी भाव चार गति के जीवों में पाया जाता है।

पारिणामिक, औदयिक और क्षायिक रूप त्रिक संयोगी भाव केवलियों में तेरहवें-चौदहवें गुणस्थान में पाया जाता है।

(h) **1 से 12 गुणस्थान तक जिन प्रकृतियों का क्षयोपशम सभी जीवों के नियम से रहता है, उन के नाम लिखिए।**

उ. मतिज्ञानावरण, श्रुतज्ञानावरण, अचक्षुदर्शनावरण तथा अन्तराय कर्म की दानान्तराय आदि पाँच प्रकृतियाँ, ये 8 प्रकृतियाँ ।

कक्षा : आठवीं – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 06 जनवरी, 2019)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 10x1 = (10)

(a) मनयोगी में जीव के कुल भेद हैं-

(क) 220 (ख) 212

(ग) 247 (घ) कोई नहीं (ख)

(b) निम्न में से सबसे कम है-

(क) नरक (ख) तिर्यञ्च

(ग) मनुष्य (घ) देव (ग)

(c) निम्न में से सबसे अधिक है-

(क) सम्यग्दृष्टि (ख) मिश्रदृष्टि

(ग) मिथ्यादृष्टि (घ) तीनों समान (ग)

(d) परिहार विशुद्धि संयत में कितने उपयोग होते हैं-

(क) 7 (ख) 9

(ग) 8 (घ) 6 (क)

(e) उपशम समकिती में कितने योग होते हैं-

(क) 11 (ख) 13

(ग) 15 (घ) 09 (ख)

(f) निम्न में से सबसे अधिक है-

(क) क्रोध कषायी (ख) मान कषायी

(ग) माया कषायी (घ) लोभ कषायी (घ)

(g) पद्म लेश्या में गुणस्थान होते हैं-

(क) प्रथम सात (ख) अंतिम सात

(ग) 6 से 10 (घ) 5 से 10 (क)

(h) अपरीत में जीव आते हैं-

(क) अभवी (ख)कृष्ण पक्षी

(ग) दोनों (घ) सिर्फ भवी (ग)

(i) क्षायिक भाव के भेद है-

(क) 21 (ख) 18

(ग) 09 (घ) 02 (ग)

(j) सम्यग्दृष्टि जीव में कितने भाव मिल सकते हैं-

(क) 3 या 4 (ख) 4 या 5

(ग) 3,4 या 5 (घ) सिर्फ 3 (ग)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 10x1 = (10)

(a) वेदक समकित से तात्पर्य क्षायिक समकित के अंतिम समय से है। (नहीं)

(b) अचरम में जीव के 563 भेद होते हैं। (नहीं)

(c) अनिन्द्रिय में अंतिम तीन लेश्या मिलती हैं। (नहीं)

(d) भाषक में जीव के पाँच भेद होते हैं। (हाँ)

(e) इच्छापूर्वक नहीं किया गया आहार आभोग निर्वर्तित है। (नहीं)

(f) आहार का थोकड़ा पन्नवणा सूत्र के 28वें पद में चलता है। (हाँ)

(g) अशुभ योगी प्रमादी संयती अनारम्भी है। (नहीं)

(h) भगवती सूत्र के 11वें शतक में आत्मारम्भी-परारम्भी का थोकड़ा चलता है। (नहीं)

(i) दो या दो से अधिक भावों से मिले हुए को सान्निपातिक भाव कहते हैं। (हाँ)

(j) प्रथम तीन गुणस्थानों में क्षायोपशमिक भाव नहीं मिलता है। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 10x1 = (10)

(a)	वैक्रिय मिश्र काययोग में देवों के भेद	(क) 283	184
(b)	एकान्त पुरुषवेद में जीव के भेद	(ख) प्रतिसमय	70
(c)	सम्यग्दृष्टि में जीव के भेद	(ग) 33000 वर्ष	283
(d)	असन्नी में जीव के भेद	(घ) अन्तर्मुहूर्त्त	191
(e)	पृथ्वीकायिक का आहारेच्छा का जघन्य काल	(च) 27	प्रतिसमय
(f)	पहले देवलोक का आहारेच्छा का जघन्य काल	(छ) 184	पृथक्त्व दिवस
(g)	सर्वार्थसिद्ध देव का आहारेच्छा का उत्कृष्ट काल	(ज) 13	33000 वर्ष
(h)	नारकी का आहारेच्छा का उत्कृष्ट काल	(झ) पृथक्त्व दिवस	अन्तर्मुहूर्त्त
(i)	अपूर्वकरण गुणस्थान में भाव के कुल उत्तर भेद	(य) 70	27
(j)	सयोगी केवली गुणस्थान में भाव के कुल उत्तर भेद	(र) 191	13

प्र.4 मुझे पहचानो :- 10x1 = (10)

(a)	मैं द्रव्य की स्वाभाविक शक्ति से ही आविर्भूत भाव हूँ।	पारिणामिक भाव
(b)	सिद्धावस्था में पारिणामिक भावों में से सिर्फ मैं ही मिलता हूँ।	जीवत्व
(c)	मुझमें जीव के 192 भेद मिलते हैं।	अमर
(d)	मुझमें जीव के 6 भेद मिलते हैं।	वनस्पतिकाय
(e)	देवकुरु मेरा ही एक भेद है।	अकर्मभूमिज मनुष्य
(f)	मैं पाँचवें देवलोक के ऊपर रहने वाला किल्विषिक देव हूँ।	त्रयोदश सागरिक
(g)	सूक्ष्म एवं साधारण वनस्पति के अपर्याप्त तथा पर्याप्त मेरे अन्तर्गत शामिल है।	निगोद/ काय परीत
(h)	तिर्यञ्च के भेदों में से अढ़ाईद्वीप के बाहर मैं नहीं मिलता हूँ।	बादर तेउकाय-अपर्याप्त पर्याप्त
(i)	102 बोल के वेद द्वार में मैं सबसे अधिक हूँ।	सवेदी
(j)	सास्वादन समकिती से मैं संख्यात गुणा हूँ।	उपशम समकिती

प्र.5 एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- 12x2=(24)

(a) जीवधड़े के आधार पर जीव के सभी शाश्वत भेद लिखिए।

उ. नरक-7 पर्याप्त, तिर्यंच-43 (48 में से 5 सन्नी तिर्यंच के अपर्याप्त को छोड़कर), मनुष्य-101 (गर्भज मनुष्य के पर्याप्त), देव-99 पर्याप्त, समुच्चय-250

(b) 102 बोल में देवी से अधिक कौन-कौन तथा कितने गुणे हैं ?

उ. देवी से सिद्ध अनन्त गुणे और उनसे तिर्यञ्च अनन्त गुणे हैं।

(c) 102 बोल में पर्याप्त द्वार की अल्पबहुत्व लिखिए।

उ. सबसे थोड़े नो पर्याप्त नो अपर्याप्त, उनसे अपर्याप्त अनन्त गुण और उनसे पर्याप्त असंख्यात गुण हैं।

(d) ओजआहारी कौन कहलाते हैं ?

उ. उत्पत्ति देश में जो आहार योग्य पुद्‌गलों का समूह है उसका आहार करने वाले ओज आहारी कहलाते हैं।

(e) आहारेच्छा का उत्कृष्ट काल पृथक्त्व दिवस किनका है ?

उ. आहारेच्छा का उत्कृष्ट काल पृथक्त्व दिवस नव निकाय, व्यन्तर तथा ज्योतिषी का है।

(f) आत्मारंभी किसे कहते हैं ?

उ. जो स्वयं पाप कार्यों में प्रवृत्त होता है या अपनी आत्मा द्वारा स्वयं पाप कार्य करता है, उसे 'आत्मारंभी' कहते हैं।

(g) शुभ योगी किसे कहते हैं ?

उ. जो उपयोगपूर्वक, सावधानीपूर्वक समत्व भावों के साथ योगों की प्रवृत्ति करता है, उसे शुभयोगी कहते हैं।

(h) आत्मारंभी-परारंभी के थोकड़े में संसारी जीव के कौनसे दो भेद बताये हैं ?

उ. संयति और असंयति।

(i) आत्मारंभी-परारंभी के थोकड़े अनुसार कापोत लेशी जीव कैसे होते हैं ?

उ. कापोत लेशी जीव आत्मारंभी हैं, परारम्भी हैं, तदुभयारम्भी हैं, किन्तु अनारम्भी नहीं हैं।

(j) क्षायिक भाव को परिभाषित कीजिए।

उ. कर्म के आत्यन्तिक क्षय से प्रकट होने वाला भाव 'क्षायिक भाव' है।

(k) 10 से 12वें गुणस्थान में औपशमिक भाव के भेद लिखिए।

उ. 10वें में- 1 (उपशम समकित), 11वें में-2 (उपशम समकित, उपशम चारित्र) तथा 12वें में-0

(l) सान्निपातिक भाव का चतु:संयोगी कौनसा भेद है जो उपशम श्रेणी में मिलता है ?

उ. क्षायोपशमिक, पारिणामिक, औदयिक और औपशमिक।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में लिखिए : - 12x3=(36)

(a) प्रथम गुणस्थान में क्षायोपशमिक भाव के 10 भेद लिखिए।

उ. पहले गुणस्थानों में तीन अज्ञान, चक्षु-अचक्षुदर्शन, दानादि पाँच लब्धियाँ।

(b) छठे गुणस्थान में औदयिक भाव के 15 भेद लिखिए।

उ. मनुष्य गति, चार कषाय, तीन वेद, छह लेश्या, असिद्धत्व ये 15 भेद होते हैं।

(c) जीवधड़े से गति द्वार की आठ मार्गणाओं में जीव के भेद लिखिए।

नरक गति में- 14, तिर्यंच गति में-48, तिर्यंचिणी में- 10, मनुष्य गति में- 303, मनुष्यिणी में-202, देवगति में-198, देवांगना में-128 तथा सिद्ध गति में 0

(d) 4, 5 तथा 6 लेश्या में जीव के कुल भेद स्पष्ट कीजिए।

उ.

जीवों की मार्गणा	नरक	तिर्यंच	मनुष्य	देव	समुच्चय
चार लेश्यी में	-	3	172	102	277
पाँच लेश्यी में	-	-	-	-	-
छः लेश्यी में	-	10	30	-	40

(e) उपशम समकित में देव के 111 भेद लिखिए।

उ. देवों के 111 भेद- (35 वैमानिक के अपर्याप्त, सातवें से ग्यारहवें गुणस्थान में काल करने की अपेक्षा से और 76 देवों के पर्याप्त- 15 परमाधामी, 3 किल्विषी और अनुत्तर विमान को छोड़कर शेष पर्याप्त देवता, इस तरह कुल 35+76=111) भेद होते हैं।

(f) पद्म लेश्या में देव के 26 भेदों को लिखिए।

उ. तीसरा, चौथा, पाँचवाँ देवलोक, दूसरा किल्विषी, 9 लोकान्तिक = इन 13 के अपर्याप्त-पर्याप्त

(g) धातकी खण्ड में मनुष्य के 54 भेदों के नाम लिखिए।

उ. 2 भरत, 2 ऐरवत, 2 महाविदेह, 2 देवकुरू, 2 उत्तरकुरू, 2 हरिवास, 2 रम्यक्वास, 2 हैमवत, 2 ऐरण्यवत्, इनके अपर्याप्त, पर्याप्त और सम्मूर्च्छिम = 54 भेद मनुष्य के।

(h) मिश्रदृष्टि में जीवस्थान, गुणस्थान, योग, उपयोग तथा लेश्या लिखिए।

उ.

	जीव	गुणस्थान	योग	उपयोग	लेश्या
मिश्र दृष्टि	1	1	10	6	6

(i) 102 बोल के थोकड़े के आधार पर दर्शन द्वार की अल्पबहुत्व लिखिए।

उ. सबसे थोड़े अवधिदर्शनी, उनसे चक्षुदर्शनी असंख्यात गुण, उनसे केवलदर्शनी अनन्त गुण और उनसे अचक्षुदर्शनी अनन्त गुण हैं।

(j) अनाकार उपयोग में 10वाँ गुणस्थान क्यों नहीं मानते हैं ?

उ. दसवें गुणस्थान में जो भी जीव प्रवेश करता है, वह साकार उपयोग में ही प्रवेश करता है। वहाँ साकार उपयोग का अन्तर्मुहूर्त काल समाप्त होने के पहले ही दसवें गुणस्थान की अन्तर्मुहूर्त की स्थिति पूर्ण हो जाती है, इसलिए दसवें गुणस्थान में अनाकार उपयोग नहीं माना जाता।

(k) अनाहारक में जीवस्थान, गुणस्थान, योग, उपयोग तथा लेश्या लिखिए।

उ.	जीव	गुणस्थान	योग	उपयोग	लेश्या
अनाहारक	8	5	1	10	6

(l) संयम द्वार में मिलने वाले योगों की संख्या क्रमवार लिखिए।

उ.	योग
समुच्चय संयत में	15
सामायिक संयत में	14
छेदोपस्थापनीय संयत मे	14
परिहारविशुद्धि संयत में	9
सूक्ष्म-संपराय संयत में	9
यथाख्यात संयत में	11
संयतासंयत में	12
असंयत में	13
नो संयत नो असंयत नो संयतासंयत में	-

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : आठवीं – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 07 जनवरी, 2018)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) ....

(शब्दों में) ....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

सावधान

1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दें। 3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से काम लें।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	20	18	32	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

कक्षा : आठवीं – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 07 जनवरी, 2018)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 10x1 = (10)

(a) क्षयोपशम भाव का भेद है-

(क) जीवत्व (ख) भव्यत्व

(ग) अभव्यत्व (घ) मतिज्ञान (घ)

(b) औदयिक भाव के भेद हैं-

(क) 10 (ख) 18

(ग) 21 (घ) 3 (ग)

(c) तेरहवें गुणस्थान में भाव हैं -

(क) 3 (ख) 5

(ग) 4 (घ) 2 (क)

(d) क्षायिक और पारिमाणिक भाव रूप द्विसंयोगी भाव मिलता है-

(क) सिद्धों में (ख) तिर्यंच गति में

(ग) मनुष्य में (घ) आचार्यों में (क)

(e) छठे देवलोक के देव की आहारेच्छा का जघन्य काल है-

(क) प्रति समय (ख) 10 हजार वर्ष

(ग) पृथक्त्व दिवस (घ) एक हजार वर्ष (ख)

(f) मनुष्य की आहारेच्छा का जघन्य काल है-

(क) अन्तर्मुहूर्त (ख) 2 हजार वर्ष

(ग) 2 दिन (घ) तीन दिन (क)

(g) अनाहारक में गुणस्थान है-

(क) पहला गुणस्थान (ख) 1 से 4 गुणस्थान

(ग) 1,2,13 व 14 गुण. (घ) 1,2,4 गुणस्थान (ग)

(h) अभाषक में उपयोग है-

(क) 6 (ख) 8

(ग) 11 (घ) 5 (ग)

(i) अवेदी में जीव के भेद हैं-

(क) 15 (ख) 5

(ग) 563 (घ) 553 (क)

(j) आहार का थोकड़ा इस सूत्र में है-

(क) भगवती सूत्र (ख) नंदीसूत्र

(ग) अनुयोग द्वार सूत्र (घ) पन्नवणा सूत्र (घ)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 10x1 = (10)

(a) कालोदधि समुद्र का जल शांत है, वहाँ बड़वानल नहीं होता है। (हाँ)

(b) जृंभक देव वैताढ्य और कंचनगिरि पर मिलते हैं। (हाँ)

(c) कर्मों के उदय से होने वाले भाव को क्षायोपशमिक भाव कहते हैं। (नहीं)

(d) उपशम चारित्र 4 से 11 गुणस्थान पर्यन्त होता है। (नहीं)

(e) शुभयोगी उपयोगपूर्वक, सावधानीपूर्वक समत्त्व भावों के साथ योगों की प्रवृत्ति करता है। (हाँ)

(f) कापोत लेशी एकेन्द्रिय अनारंभी भी होते हैं। (नहीं)

(g) तीन विकलेन्द्रिय की आहारेच्छा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त का है। (हाँ)

(h) नैरयिक अचित्त पुद्‌गलों का आहार करते हैं, सचित्त और मिश्र का आहार नहीं करते हैं। (हाँ)

(i) नारकी से देव संख्यात गुणा है। (नहीं)

(j) देवी में 6 लेश्या पायी जाती हैं। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 10x1 = (10)

(a)	क्षयोपशम समकित में	(क) जीव के भेद 347	275
(b)	अनाहारक में	(ख) जीव के भेद 231	347
(c)	पर्याप्त में	(ग) जीव के भेद 191	231
(d)	असन्नी में	(घ) जीव के भेद 275	191
(e)	हुण्डक संस्थान में	(च) जीव के भेद 212	193
(f)	अभाषक में	(छ) जीव के भेद 193	358
(g)	समचतुरस्र संस्थान में	(ज) जीव के भेद 118	410
(h)	दो दृष्टि में	(झ) जीव के भेद 358	170
(i)	अढ़ाई द्वीप के बाहर	(य) जीव के भेद 410	118
(j)	वज्र ऋषभ नाराच संहनन	(र) जीव के भेद 170	212

प्र.4 मुझे पहचानो :- 10x2=(20)

(a)	मुझमें प्रदेश और विपाक दोनों प्रकार के कर्मोदय रूक जाते हैं।	उपशम
(b)	मैं शरीर पर्याप्ति होने के बाद रोमों (त्वचा)के द्वारा होने वाला आहार है।	लोमाहार/रोमाहार
(c)	मुझमें अभव्य तथा सिद्ध दोनों का समावेश किया जाता है।	अचरम
(d)	मैं समकित मोहनीय के चरम दलिक का वेदक हूँ।	वेदक समकित
(e)	मेरी आहारेच्छा का उत्कृष्ट काल 18 हजार वर्ष है। बोनस अंक देवें ।	5वाँ,8वाँ देवलोक
(f)	सिद्ध शिला में सूक्ष्म के अलावा बादर के मेरे दो भेद पाये जाते हैं।	बादर पृथ्वीकाय
(g)	मैं एक प्रकार की समकित हूँ, जिसमें नरकानुपूर्वी का उदय नहीं होता है।	सास्वादन समकित
(h)	मुझमें 14 योग व जीव के 5 भेद होते हैं।	भाषक
(i)	मुझमें जीव का भेद 7, गुणस्थान 3, योग 5 तथा लेश्या 6 पायी जाती हैं।	अपर्याप्त
(j)	मैं पहले और दूसरे देवलोक के नीचे के प्रतर में रहने वाला किल्विषी हूँ।	त्रैपल्योपमिक/पहला किल्विषी

प्र.5 एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- 9x2=(18)

(a) शाश्वत किसे कहते हैं?

उ. विरह पड़ने पर भी जो जीव के भेद विद्यमान रहे, हमेशा मिले, वे शाश्वत कहलाते हैं।

(b) सान्निपातिक भाव का पंच संयोगी भंग लिखिए और यह भंग किसमें पाया जाता है ?

उ. क्षायोपशमिक, पारिणामिक, औदयिक, औपशमिक तथा क्षायिक ये पाँचों भाव रूप पंचसंयोगी भाव चौथे से ग्यारहवें गुणस्थान तक के ऐसे जीवों में पाये जाते हैं जो क्षायिक समकित प्राप्त करने के बाद उसी भव में उपशम श्रेणि को प्राप्त करते हैं।

(c) द्विकसंयागी सान्निपातिक भाव लिखिए एवं यह किसमें पाया जाता है ?

उ. क्षायिक और पारिणामिक भाव रूप द्विसंयोगी भाव सिद्धों में मिलता है।

(d) क्षायिक भाव के 9 भेद लिखिए।

उ. क्षायिक भाव के 9 भेद-

1. केवलज्ञान,	2. केवलदर्शन,	3. क्षायिक सम्यक्त्व,
4. क्षायिक चारित्र,	5. अनन्त दान,	6. अनन्त लाभ,
7. अनन्त भोग,	8. अनन्त उपभोग,	9. अनन्त वीर्य।

(e) पारिणामिक भाव को परिभाषित कीजिए।

उ. जिसके कारण मूल वस्तु में किसी प्रकार का परिवर्तन न हो, किन्तु स्वभाव में ही परिणत होते रहना पारिणामिक भाव है अथवा कर्म के उदय, उपशम, क्षय और क्षयोपक्षम की अपेक्षा न रखने वाले द्रव्य की स्वभावभूत अनादि पारिणामिक शक्ति से ही आविर्भूत भाव को पारिणामिक भाव कहते हैं।

(f) भरत क्षेत्र में जीव के भेद लिखिए।

उ. भरत-ऐरवत क्षेत्र में 51-51 भेद (48 तिर्यंच के और 3 मनुष्य के- अपर्याप्त, पर्याप्त और सम्मूर्च्छिम)

(g) जीवधड़ा से मनयोगी में जीव के भेद लिखिए।

उ. मनोयोगी में 212 भेद (7 नारकी, 5 सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय, 101 सन्नी मनुष्य और 99 देवता इन सबके पर्याप्त)

(h) तेजो लेश्या में गुणस्थान, योग, उपयोग लिखिए।

उ.

	गुणस्थान	योग	उपयोग
तेजो लेश्या	7	15	10

(i) परित्त द्वार की अल्पबहुत्व लिखिए।

उ. सबसे थोड़े परीत, उनसे नो परीत नो अपरीत अनन्त गुण और उनसे अपरीत अनन्त गुण हैं।

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में लिखिए : -(कोई 8) 8x4=(32)

(a) संसारी जीवों के भेद करते हुए उसमें आत्मारंभी आदि की विवक्षा कीजिए।

उ. संसारी जीवों के दो भेद हैं- संयति और असंयति। संयति के दो भेद हैं-प्रमादी और अप्रमादी। अप्रमादी संयति न तो आत्मारम्भी हैं, न परारम्भी हैं, न तदुभयारम्भी हैं, किन्तु अनारम्भी हैं। प्रमादी के दो भेद हैं- शुभयोगी और अशुभयोगी। शुभयोगी भी न तो आत्मारम्भी हैं, न परारम्भी हैं, न तदुभयारम्भी हैं, किन्तु अनारम्भी हैं। अशुभयोगी आत्मारम्भी भी हैं, परारम्भी भी हैं, तदुभयारम्भी भी हैं, किन्तु अनारम्भी नहीं हैं।

(b) औदयिक भाव के 21 भेदों के नाम लिखिए।

उ. औदयिक भाव के 21 भेद 1. अज्ञान, 2. असिद्धत्व, 3. असंयम, 4. कृष्ण, 5. नील, 6. कपोत, 7. तेजः, 8. पद्म, 9. शुक्ल लेश्या, 10. क्रोध,11. मान, 12. माया, 13. लोभ कषाय 14. नरक, 15. तिर्यंच, 16. मनुष्य, 17 देवगति, 18. पुरुष, 19. स्त्री, 20. नपुसंकवेद, 21. मिथ्यात्व।

(c) दृष्टि द्वार के कोई चार बोलों में चारों गति में पाये जाने वाले जीव के भेद लिखिए।

उ. जीवों की मार्गणा	नरक	तिर्यंच	मनुष्य	देव	समुच्चय
सम्यग्दृष्टि में	13	18	90	162	283
मिथ्यादृष्टि में	14	48	303	188	553
मिश्रदृष्टि में	7	5	15	76	103
सास्वादन समकिती में	7	18	30	143	198
उपशम समकिती में	7	5	15	111	138
वेदक समकिती/क्षायिक वेदक में	3	1	55	35	94
क्षयोपशम समकिती में	13	10	90	162	275
क्षायिक समकिती में	6	2	90	70	168
एकान्त सम्यग्दृष्टि में	-	-	-	10	10
एकान्त मिथ्यादृष्टि में	1	30	213	36	280
एक दृष्टि में	1	30	213	46	290
दो दृष्टि में	6	13	75	76	170
तीन दृष्टि में	7	5	15	76	103

नोटः- इनमें से कोई भी चार बोल मान्य है।

(d) नीचे लोक में जीव के भेद लिखिए तथा वहाँ मनुष्य के भेद मानने के क्या कारण है ?

उ. नीचालोक में 115 भेद (14 नारकी, 48 तिर्यंच के, 3 मनुष्य (जम्बूद्वीप के महाविदेह क्षेत्र की सलिलावती व वप्रा विजय नीचे लोक में 100 योजन तक गई हुई हैं, वहाँ रहने वाले मनुष्यों की अपेक्षा से गर्भज मनुष्य के अपर्याप्त, पर्याप्त एवं सम्मूर्च्छिम) 10 भवनपति, 15 परमाधामी, इन 25 के अपर्याप्त-पर्याप्त =50 देवता के)

(e) वैक्रिय मिश्र काय योग में जीव के भेद स्पष्ट कीजिए।

उ. जीव के भेद- 14 नारकी, 6 तिर्यंच (5 सन्नी तिर्यंच, 1 बादर वायुकाय के पर्याप्त), 15 कर्मभूमिज मनुष्य के पर्याप्त, 184 देवता- (99 अपर्याप्त, 85 पर्याप्त) इस प्रकार कुल 14+6+15+184=219 भेद होते हैं।

(f) वेद द्वार के बोलों में बासठिया लिखिए।

उ.

	जीव	गुणस्थान	योग	उपयोग	लेश्या
1. सवेदी में	14	9	15	10	6
2. पुरुष वेदी में	2	9	15	10	6
3. स्त्री वेदी में	2	9	13	10	6
4. नपुंसकवेदी में	14	9	15	10	6
5. अवेदी में	1	6	11	9	1

(g) दसवें गुणस्थान में अनाकार उपयोग नहीं मानने का कारण लिखिए।

उ. दसवें गुणस्थान में जो भी जीव प्रवेश करता है, वह साकार उपयोग में ही प्रवेश करता है। वहाँ साकार उपयोग का अन्तर्मुहूर्त्त काल समाप्त होने के पहले ही दसवें गुणस्थान की अन्तर्मुहूर्त्त की स्थिति पूर्ण हो जाती है, इसलिए दसवें गुणस्थान में अनाकार उपयोग नहीं माना जाता ।

(h) भावों के चतु:संयोगी भंगों को लिखिए तथा ये किनमें पाये जाते हैं ?

उ. क्षायोपशमिक, पारिणामिक, औदयिक और औपशमिक रूप चतु:संयोगी भाव चौथे से ग्यारहवें गुणस्थान तक के उपशम समकित वालों में तथा उपशम श्रेणी करने वालों जीवों में पाया जाता है।

क्षायोपशमिक, पारिणामिक, औदयिक और क्षायिक रूप चतु:संयोगी भाव चौथे से बारहवें गुणस्थान तक के क्षायिक समकित वालों में तथा क्षपक श्रेणी करने वाले जीवों में पाया जाता है।

(i) कषाय द्वार के बोलों की अल्पबहुत्व लिखिए।

उ. अल्पबहुत्व - सबसे थोड़े अकषायी, उनसे मानी अनन्त गुण, उनसे क्रोधी विशेषाधिक, उनसे मायी विशेषाधिक, उनसे लोभी विशेषाधिक और उनसे सकषायी विशेषाधिक है।